International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(2): 60-61

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(2): 60-61
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-01-2021
Accepted: 03-02-2021

सन्दीप
शोधच्छात्र, संस्कृत-विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़, भारत

Corresponding Author:
सन्दीप
शोधच्छात्र, संस्कृत-विभाग,
पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़, भारत

परशुराम अवतार

सन्दीप

प्रस्तावना

भगवान विष्णु के दश अवतारों में छठा अवतार परशुराम का माना जाता है। परशु आयुध धारण करने के कारण इनका नाम परशुराम पड़ा था। पिता जमदग्नि तथा माता रेणुका से उत्पन्न परशुराम को जामदग्नी भी कहा जाता है। भागवत पुराण के अनुसार उन्होंने इस पृथ्वी को 21 बार क्षत्रिय हीन कर दिया था। इस पुराण के अनुसार जब क्षत्रिय राजा रजोगुणी तथा विशेष रूप से तमोगुणी हो गए थे तब प्रजा को उनके क्रूर व्यवहार से बचाने के लिए परशुराम रूप में भगवान विष्णु ने इनका विनाश करने के लिए अवतार लिया था।[1]

मदोन्मत क्षत्रियों का विनाश करने के लिए भगवान विष्णु परशुराम के रूप में अवतीर्ण हुए थे। वाल्मीकि रामायण में वे राम की परीक्षा लेते दिखाई देते हैं।[2] महाभारत में एक कथानक के अनुसार इन्द्र देवता राजा कार्तवीर्य के पराक्रम से घबराकर भगवान विष्णु से उनके वध की प्रार्थना करते हैं। पुनः हैह्यराज के इन्द्र पर आक्रमण के कारण इन्द्र विष्णु से मन्त्रणा करते हैं और अवतार के निमित्त बदरिकाश्रम की यात्रा करते हैं।[3]

महाभारत के नारायणीयोपाख्यान में भगवान विष्णु से स्वयं कहलवाया गया है कि त्रेता युग में भृगुकुल में परशुराम रूप में उत्पन्न होकर क्षत्रियों का संहार करूँगा।[4]

भागवत पुराण में कहा गया है कि जब ब्राह्मण-द्रोही तथा आर्य-मर्यादा का उल्लंघन करने वाले क्षत्रिय पृथ्वी के कंटक बन गए, तब भगवान ने महापराक्रमी परशुराम के रूप में अवतार लेकर अपने परशु से 21 बार उनका विनाश किया।[5] भागवत पुराण में परशुराम के चरित्र एवं उनके द्वारा किए गए क्षत्रिय संहार की विस्तृत कथा मिलती है। हैहय वंश का अन्त करने के लिए स्वयं विष्णु ने परशुराम के रूप में अवतार ग्रहण कर इस पृथ्वी को 21 बार क्षत्रियों से शून्य कर दिया अर्थात पृथ्वी से क्षत्रियों को समाप्त कर दिया।[6] पिता के वध को कारण बनाकर 21 बार उन्होंने पृथ्वी के क्षत्रियों का वध करके समन्तपंचम तीर्थ में रक्त भरे हुए पाँच तालाब बना दिये। पिता के सिर को धड़ से जोड़ कर यज्ञादि करने पर इनके पिता को संकल्प शरीर की प्राप्ति हो गई और उन्हें सप्तर्षियों में स्थान प्राप्त हो गया। पिता की आज्ञा से उन्होंने अपने सभी भाइयों को मार डाला था और अपनी माता रेणुका का भी सिर काट दिया था।

अग्नि पुराण में भी इस अवतार का वर्णन मिलता है, जिसके अनुसार क्षत्रियों को उद्धत जानकर देवता और ब्राह्मण आदि का पालन करने वाले भगवान विष्णु ने जमदग्नि की पत्नी रेणुका के गर्भ से परशुराम के रूप में अवतार लिया। राजा कार्तवीर्य ने एक बार जमदग्नि के आश्रम में शरण लिया और उनकी गाय कामधेनु से प्रभावित होकर उन्होंने उसे ऋषि से

माँगा किन्तु उनके मना करने पर राजा उसे बलात् छीन ले गया।

तदुपरान्त परशुराम ने युद्ध में राजा का सिर काटकर उसका वध कर दिया। राजा कार्तवीर्य के वध से क्रोधित होकर उसके पुत्रों ने जमदग्नि का वध कर डाला। परशुराम ने पितृवध से क्रुद्ध होकर 21 बार पृथ्वी को क्षत्रियों से रहित कर दिया और कुरुक्षेत्र में पाँच कुण्ड बनवाकर उनसे पितरों का तर्पण करके, समस्त पृथ्वी कश्यप को देकर स्वयं महेन्द्र पर्वत पर चले गए।[7] विष्णु पुराण में परशुराम की कार्तवीर्यार्जुन का वध करने वाला नारायण का अंशावतार कहा गया है। मत्स्य पुराण में भी इसी प्रकार की कथा मिलती है।[8] इस प्रकार परशुराम अवतार का मुख्य प्रयोजन भूतल पर दुष्ट क्षत्रियों का नाश करना है।

वस्तुतः परशुराम के व्यक्तित्व से जुड़े आख्यानों के मूल स्रोत महाभारत[9] में वर्णित हैं। इसी प्रकार संक्षेप में मत्स्य पुराण[10] में भी विष्णु के परशुराम अवतार का उल्लेख किया गया है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि इक्ष्वाकु कुल में उत्पन्न महाराज रेण्ड की कन्या रेणुका से मुनि जमदग्नि को क्षत्रिय राजाओं का ध्वंस करने वाले भगवान परशुराम पुत्र के रूप में उत्पन्न हुए, जो संपूर्ण लोक के गुरु विष्णु नारायण के अंश थे।[11]

विष्णु के अवतारों में उनका परशुराम अवतार छठा बताया गया है मत्स्य पुराण में इस कथन की पुष्टि होती है, परन्तु इसमें एक विशेष बात यह भी कही गई है कि यह अवतार 19वें त्रेता युग में हुआ था। जब विश्वामित्र विष्णु के यज्ञ के पुरोहित बने थे।[12] भागवत पुराण के अनुसार यह विष्णु का सोहलवाँ अवतार था।[13] इस प्रकार रामायण, महाभारत, पुराणों आदि में परशुराम के अवतार के विषय में उल्लेख मिलता है।

सन्दर्भ

1. दुष्टं क्षत्रं भुवो भारमब्रह्मण्यमनीनशत्।
2. रजस्तमोवृतमहन कल्गुन्यपि कृतेऽहंसि।। श्रीमद्भागवत पुराण – 9.15.15
3. वाल्मीकि रामायण – 1.76.12
4. महाभारत, वनपर्व – 115.15-18
5. वही, शान्तिपर्व – 339.17
6. क्षत्रं क्षयाय विधिनोपभृतं महात्मा
7. ब्रह्मध्रुगुज्झितपथं नरकार्तिलिप्सु।
8. उद्धन्त्यसाववनिकण्टकमुकग्रवीर्य
9. स्रिः सप्तकृत्व उरूधारपरश्वधेन।। श्रीमद्भागवत पुराण – 2.7.22
10. यमाहुर्वासुदेवाशं हैहयानां कुलान्तकम्।
11. त्रिः सप्तकृत्वो य इमा चक्रे निःक्षत्रियां महीम्।। वही - 9.15.14
12. अग्निपुराण – 4.12-18
13. मत्स्य पुराण – अध्याय 47
14. महाभारत – 249.3.98
15. एकोनविश्यां त्रेतायां सर्वक्षत्रांतकृद विभुः।
16. जामदग्न्यस्तथा षष्ठो विश्वामित्रपुरः सरः।। मत्स्य पुराण 47.244
17. जमदग्निरिक्ष्वाकुवंशोऽद्भवस्य रेणोस्तनयां रेणुकामुपयेमे।
18. तस्यां चाशेपक्षत्रहन्तारं परशुरामसंज्ञं भगवतस्सकललोकगुरोर्नारायणस्यांशं जमदग्निरजीजनत्।। विष्णु पुराण – 4.7.35-36
19. मत्स्य पुराण – 47.244
20. अवतारे षोडशमें पश्यन् ब्रह्मदुह्रो नृपान्।
21. त्रिःसप्तकृत्वः कुपितो निःक्षत्रामकरोन्महीय।। भागवत पुराण – 1.320